प्रतिक्रियाएं / Feedbacks

विज्ञान प्रकाश के माध्यम से विज्ञान तथा तकनीकी से जुड़े शोध कार्यों का हिंदी में प्रकाशन, भारतीय परिप्रेक्ष्य में हो रहे अनुसन्धान कार्यों की प्रगति को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए की गई एक सराहनीय पहल है, एवं इस नवाचार का हिस्सा होना मेरे लिए हर्ष की बात है। कई शोध कार्य अंग्रेजी भाषा में लिखने एवं प्रकाशित करने पश्चात अपनी मातृ भाषा हिंदी में अपने शोध कार्य को प्रस्तुत करने का मौका मिलना मेरे लिए कौतुक का विषय था। विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ समीक्षकों द्वारा शोध पत्र में तकनीकी सुधार हेतु बहुत अच्छे सुझाव प्राप्त हुए जो भविष्य में भी हिंदी एवं अंग्रेजी में शोध पत्र के लेखन एवं प्रस्तुति हेतु उपयोगी हैं।

Author: Sonam Paliya, AcSIR, Ghaziabad U.P.; CSIR-NEERI, Nagpur, Mhararshtra
s.paliya@neeri.res.in, sonampaliya140@gmail.com

अधिकतम विकसित देश अपनी शोध एवं शैक्षणिक प्रगति हेतु अपनी मातृभाषा को शीर्ष वरीयता देते हैं। प्रतिष्ठित यूजीसी केयर जर्नल 'विज्ञान प्रकाश' के माध्यम से भारत में भी अपनी राष्ट्र भाषा हिन्दी में तकनीकी व विज्ञान के शोध आलेखों को सघन समीक्षा स्तर के पश्चात प्रकाशन किया जाना देश को विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में खड़ा करने हेतु एक अद्वितीय कदम है। कई अंतर्राष्ट्रीय शोध जर्नल के सम्पादक मण्डल का सदस्य एवं समीक्षक होने के उपरान्त जब मुझे प्रथम बार विज्ञान प्रकाश के एक शोध पत्र के समीक्षक का कार्य सुपुर्द किया गया तो यह मेरे लिए एक नया चुनौतीपूर्ण प्रयास था क्योंकि तकनीकी शब्दों का हिन्दी रुपान्तरण, परिपथ चित्रों, एल्गोरिथम इत्यादि का हिन्दी में प्रस्तुतिकरण नये शोधार्थी /शिक्षक हेतु कठिन होने के कारण इनका समीक्षा कार्य एवं न्यूनतम त्रुटि–स्तर तक लाना समीक्षक के लिए भी कठिन कार्य है। विज्ञान प्रकाश के पूर्व अंक में लेखक रूप में मेरा एक गणितीय शोध पत्र हिन्दी भाषा में प्रकाशित होने से मैं समीक्षकों के दिशा–निर्देशों से वाकिफ था, और इसी कारण मैंने समीक्षक का दायित्व वहन किया। शोध पत्र से सम्बन्धित तकनीकी हिन्दी अंग्रेजी शब्दावली का दिया जाना इस जर्नल का विशेष आकर्षण है जो शोधार्थी / पाठकों के लिए लाभदायक है। मेरा लेखक / शोधार्थी हेतु यह सुझाव है कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली द्वारा जारी मानक वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली का प्रयोग ही श्रेयस्कर है क्योंकि गूगल हिन्दी रूपांतरण कभी कभी विषयानुसार खरे नहीं उतरते हैं। मुझे इस समीक्षक के कार्य से एक नया अनुभव प्राप्त हुआ है इस हेतु मैं जर्नल विज्ञान प्रकाश के सम्पादक मण्डल का आभारी हूँ।

Reviewer: Dr Sanjay Jain, Associate Professor, SPC Govt. College Ajmer, drjainsanjay@gmail.com

विज्ञान प्रकाश जर्नल से जुड़ना मेरे लिए अत्यंत सौभाग्य का विषय है। इस प्रक्रिया में बहुत कुछ सीखने को मिला। मैं यह सुझाव देना चाहता हूं कि जिस प्रकार से अधिकांश जर्नल में ऑनलाइन सबमिशन और पांडुलिपि ट्रैकिंग सॉफ्टवेयर होता है, जिससे लेखक एवं संपादक पांडुलिपि की स्थिति ऑनलाइन जांच कर सकते हैं। इसी तरह विज्ञान प्रकाश जर्नल में भी ट्रैकिंग सॉफ्टवेयर शामिल कर सकते हैं।

Review Coordinator: Dr. Rahul Dixit, IIIT Pune, rahul2012ism@gmail.com

पेपर लिखने के लिए समर्थन और प्रेरणा के लिए मैं आपका आभारी हूं। आपका निरंतर मार्गदर्शन पेपर लिखने में मदद करता है। शुरू में मैंने हिंदी में पेपर लिखने से मना कर दिया। मैं आपकी वजह से कर सका। पेपर राइटिंग के दौरान हमारे बीच 26 पत्राचार हुए। मैं समीक्षा प्रक्रिया के दौरान खुश महसूस कर रहा हूं। मुझे सुझाव के साथ रिव्यू पोर्ट मिला जो मेरे लिए सबसे अच्छा है। यहां तक कि समीक्षक की ओर से पेपर शीर्षक का भी सुझाव दिया गया था। इसलिए मैंने समीक्षा रिपोर्ट के संदर्भ में शीर्षक में संशोधन किया।

Author: Kapil Dave, GEC, Gandhinagar, Gujarat; Research Scholar, Madhav University, Rajasthan;
profkcdave@gmail.com

विज्ञान प्रकाश में प्रकाशित लेखों को पढ़ा, शुभ कामनायें एवं साधुवाद. सामान्यतः वैज्ञानिक लेख अंग्रेजी में लिखे जाते हैं और फिर उनका हिंदी अनुवाद किया जाता है। अनुवाद की अपनी सीमाएं एवं मर्यादाएं होती हैं, इसके लिए अनुवादक को भाषा के साथ साथ स्थानीय परिवेश की जानकारी भी आवश्यक है जिसके अभाव में वाक्यों में अंतर आ जाता है या तारतम्यता समाप्त हो जाती है। एन सी ई आर टी में अनुवाद करते समय मैं इसका अनुभव कर चुका हूँ। विज्ञान प्रकाश के लेख उच्च स्तरीय रहे हैं, शायद इसका कारण है– गहन परीक्षण, सतत एवं स्वस्थ समीक्षा और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में किये जा रहे नवाचार एव नवीन प्रयोगों का इस हिंदी जर्नल में प्रकाशन। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि विज्ञान प्रकाश अपने नाम के अनुरूप उभरते वैज्ञानिकों, विचारकों और शोधकर्ताओं के लिए प्रकाश पुंज रहेगा और हम आगे भी उच्च स्तरीय लेख पढ़ पायेगें। विज्ञान प्रकाश की टीम को धन्यवाद।

Reviewer: Dr. Anil Kumar Sharma, REO, Bharatiya Vidya Bhavan, Delhi; draksharma7@gmail.com

प्रतिष्ठित पत्रिका विज्ञान प्रकाश में प्रकाशन प्रक्रिया के दौरान यह एक अच्छा अनुभव था। सबसे पहले मैं मुख्य संपादक प्रो. (डॉ.) ओम विकास और उनकी टीम के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस वैज्ञानिक पत्रिका को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी में उपलब्ध कराया है। हालांकि मैं एक गैर–हिंदी भाषी राज्य से हूं, फिर भी समीक्षकों ने धैर्य दिखाया और शोध पत्र की भाषा को सावधानीपूर्वक यथासंभव सही किया। मैं, अन्य सह–लेखकों की ओर से, कामना करता हूं कि यह पत्रिका जल्द ही भारत और विदेशों में भी व्यापक लोकप्रियता प्राप्त करे।

Author: Dr. Aveek Samanta, Assistant Professor, Department of Botany,
Prabhat Kumar College, Contai,West Bengal,India. aveekbot@gmail.com

विज्ञान प्रकाश से विगत अनेक वर्षों के संपादकीय जुड़ाव से मुझे अनेक अनुभव हुए हैं। प्रायः लोग हिन्दी में शोधपत्र लिखने में संकोच करते हैं। उन्हें लगता है कि शायद वे नहीं लिख पाएंगे। लेकिन मैंने देखा है कि थोड़ा दिशा–निर्देश तथा मार्गदर्शन मिल जाने के बाद लोग लिखने लगते हैं, तथा सुन्दर तथा रोचक परचा भी भेजते हैं। विज्ञान प्रकाश का मूल उद्देश्य विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के गुणवत्तापुर्ण शोधपत्रों को सरल तथा सुबोध भाषा में प्रकाशित करना है। विज्ञान में तकनीकी शब्द होते हैं। इन तकनीकी शब्दों से विषयगत संकल्पनाएँ जुड़ी होती है। बिना इनके काम नहीं चल सकता। इसलिए हिन्दी में तकनीकी शब्दों हेतु भारत सरकार के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित वृहत पारिभाषिक शब्द–संग्रह www.csttpublication.mhrd.gov/english/ में दिए गए मानक शब्दों के उपयोग की संस्तुति की जाती है। जिस तरह साहित्यिक लेखन एक कला है, उसी तरह विज्ञान लेखन भी एक कला है।

प्रेषित पांडुलिपियों में प्रायः वर्तनी की त्रुटियाँ बहुत आम होती हैं। इसके लिए सिर्फ लेखक ही जिम्मेदार हों, यह जरूरी नहीं है। बहुत संभव है कि टंकण के दौरान ये गलतियाँ हो गयी हों। साथ ही वचन की गलतियाँ भी बहुतायत से देखने में आती हैं। एकवचन तथा बहुवचन को लेकर लेखकों में बहुत भ्रांन्ति मिलती है। विभक्तियों को संज्ञा से हमेशा अलग ही लिखना चाहिए। लेकिन सर्वनाम की विभक्तियाँ मिलाकर लिखी जाती हैं। कहाँ 'है' लिखा जाएगा, तथा कहाँ 'हैं', इसे लेकर सर्वाधिक भूलें देखने में आती हैं। जर्नल को जनरल भी लिखा हुआ मैंने देखा है। ह्रस्व तथा दीर्घ स्वर वर्ण, तथा संगत मात्राओं की गलतियाँ भी उतनी आम हैं। कुछ एक शोधपत्रों में देखा गया है कि लेखकों ने गूगल ट्रांसलेट की मदद से परचा तैयार किया था। ऐसे में आलेख बिल्कुल अनगढ़ ही नहीं, बल्कि कभी–कभी तो हास्यास्पद भी हो जाता है। इसलिए गूगल के जरिये अनुवाद से एकदम परहेज करने की जरूरत है।

Editor(VP): Prof. K. K. Misrha, HBCSE (TIFR), Mumbai,
Member (Editorial Board) VIGYAN PRAKASH, kkm@hbcse.tifr.res.in